ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.908

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

समकालीन कलाकार निकोलस रोरिक की कलाकृतियों का महत्व हिमालय चित्रकला के संदर्भ में

संध्या मौर्य [1]
[1] शोधार्थिनी बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा

सारांश –
हिमालय जहां ऋषियों का आवास है। यही वेदो की रचना हुई। हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाएँ उनकी गहराइयॉ, ऊँचे पहाड़ मनमुग्ध करने वाल वातावरण, झरते रजत प्रपात, गुलाबी मौसम यहॉ आने वाले किसी भी कलाकार को अपने ओर आकर्षित करता है। निकोलस रोरिक जब 1924 में भारत आये तो हिमालय केइस वातावरण ने उन्हें मुग्ध कर लिया और उन्होने बीस वर्श कुल्लु घाटी में व्यतीत किये और हिमालय को अपने चित्रण का विषय बनाया। ''रोरिक केहिमालय चित्रण केविषय में यथार्थ रूप से यह कहा गया है। आज तक संसार केकिसी चित्रकार ने हिमालय का चित्रण इतनी पटुता, इतनी गहन दृष्टि और विशेषता के साथ नहीं किया है। ''[1]

मुख्य शब्द – हिमालय, प्रकृति, कलाकार

Cite This Article: संध्या मौर्य. (2019). "समकालीन कलाकार निकोलस रोरिक की कलाकृतियों का महत्व हरमालय चरतरकला केसा दर्भ." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 48-51. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.908.

उद्देश्य
शोध पत्र का उद्देश्य बहुमुखी प्रतिभा के धनी रोरिक की हिमालय विषय से सम्बन्धित चित्रो का वर्णन करना जो उन्होने भारत जाने के बाद हिमालय की शरण में आकर निर्मित किया और इस पवित्र भूमि को अपना साधन स्थल बनाया।

प्रस्तावना
कलाकार निकोलस रोरिक का जन्म 1874 ई0 में 10 अक्टूबर को रूस के प्रसिद्ध नगर सेंट पिटर्सबर्ग में हुआ था। रोरिक की अवस्था दस वर्श की थी,11 वह अपने कुटुम्ब के 'ईश्वर' नाम के इलाके पर रहा करते थे। इसी समय वह प्राचीन 'वाइकिंग्ज' तथा पूर्व - ऐतिहासिक 'स्लेब' जाति के कुरमानों (तूदो या मिट्टी के संचित ढेरों) की परीक्षा किया करते थे। यहॉ उन्हे अत्यंत सुंदर तांबे की वस्तुए प्राप्त हुई, जिन्हे रोरिक ने पुरातत्व - समिति को भेंट कर दिया। इस प्रकार बचपन से ही रोरिक की दिलचस्पी सुंदर वस्तुओं में तथा उन की खोज में रही हैं। रोरिक 15 वर्ष की अवस्था से ही चित्रण करना तथा कलाविश्यक लेख लिखना आरम्भ कर दिये जो सामायिक पत्र - पत्रिकाओं में छपा करते थे।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585035

रोरिक कुछ समय तक पीटर्सबर्ग विश्वविघालय में कानून की शिक्षा ग्रहण करते रहे, पर उनका रूझान उन्हे कला की ओर ले गया और पीटर्सबर्ग की ललित कला अकादमी में प्रवेश किया जहॉ तीन वर्श का पाठ्यक्रम एक वर्श ही पूरा कर लिया। निकोलस रोरिक व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने पेरिस भी गये। ''1906 से 1916 तक रोरिक 'कला प्रोत्साहन समाज' के निदेशक पद पर कार्य करते रहे और इस बीच अपने तथा अन्य कलाकारों के चित्रों की प्रदर्शनियॉ आयोजित करने के साथ-साथ उन्होने बहुत सी साहित्यिक, पुरातात्विक और ललित कला संस्थाओं की स्थापना की।'' [2]

मैडम ब्लावेत्स्की ने सर्वप्रथम भारत से रोरिक का परिचय कराया था जिससे उनमें आध्यात्मिक प्रेरणा जगी। 1924 में निकोलस रोरिक भारत आये और चित्रकला की नई परम्परा कायम की। हिमालय के शान्त वाातवरण ने उनकी सूक्ष्म सौन्दर्य- चेतना को जागरूक किया। कला की साधना रोरिक के लिये योग साधना सदृष्ट थी। निकोलस रोरिक ने अपने जीवन काल में लगभग सात हजार चित्रों की रचना की। उनके चित्र दुनिया भर में सैकड़ो संग्रहालयों, कला- विथियों और निजी संग्रहो में है। इलाहाबाद के नगर पालिका संग्रहालय की गिनती भारत के उन चन्द संग्रहालयों में होती है, जिनमें रोरिक के चित्रों के लिए एक अलग कक्ष सुरक्षित है। 'रूसी गिर्जाघर' और 'तिमिरनाशक ज्योति' जैसे कुछ चित्रों को छोड़कर इलाहाबाद संग्रहालय मे प्रदर्शित रोरिक के उन्नीस चित्रों में से अधिकांश की पृष्ठभूमि और मूल आधार पर्वत ही है।

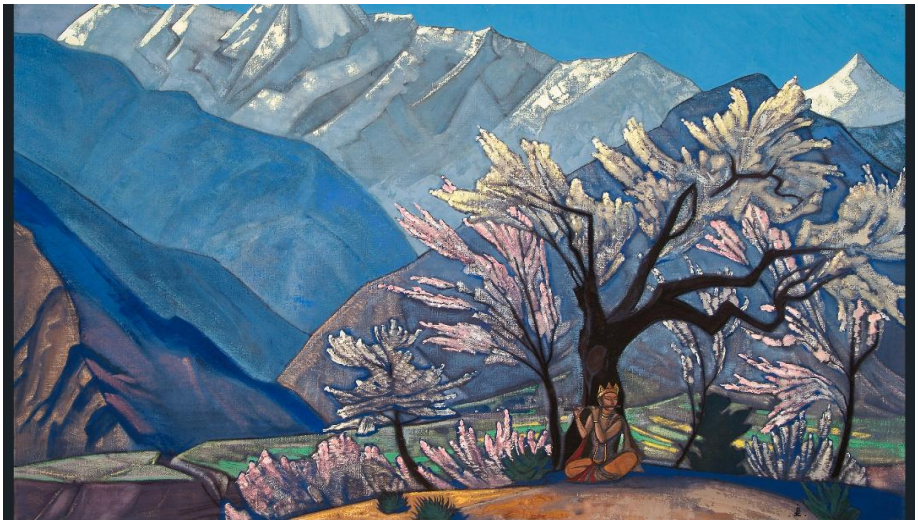

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585035

इलाहाबाद के नगर पालिका संग्रहालय में हिमालय चित्रण की प्रधानता है, बर्फ से ढॅकी चोटियॉ, गहरी अन्धेरी कन्दाराऍ और कम्बल में लिपटे विशालकाय चट्टानी टीले, रोहतांग दर्रा, पहाड़ो का सौन्दर्य व्यास कुण्ड, पवित्र मेशपाल, गूंगा चौहान और नरसिंह इन सभी चित्रों में रोरिक ने हिमालय की गोद में स्थित रमणीक स्थल को हमारे संमुख प्रस्तुत किया। बर्फीले पर्वतों उनके ऊपर नीला आकाश, नीले रंग में पहाड़, झरने बादलों के अनेको रूप रंग और उन पर पड़ता सूर्य का प्रकाश मनमोहक हस्य प्रस्तुत करते है। अपने चित्रों के माध्यम से रोरिक अपने समय के इतिहास पुरुष बने हैं। चित्रों के विषयवस्तु मनमोहक रंगो का प्रयोग धूप.छॉव का चित्रण ऊचाई गहराई का प्रदर्शन सूर्य की किरणों के अनेक रंग आदि विशेषताओं का चित्रण करने के कारण इन्हे पर्वतों का चितेरा कहा जाता है। इनके चित्रो का अवलोकन करने से ज्ञात होता है। कि वास्तु शिल्प, मूर्तिकला, स्थापत्य से प्राप्त जानकारी का प्रयोग भी चित्रों में इन्होने किया।

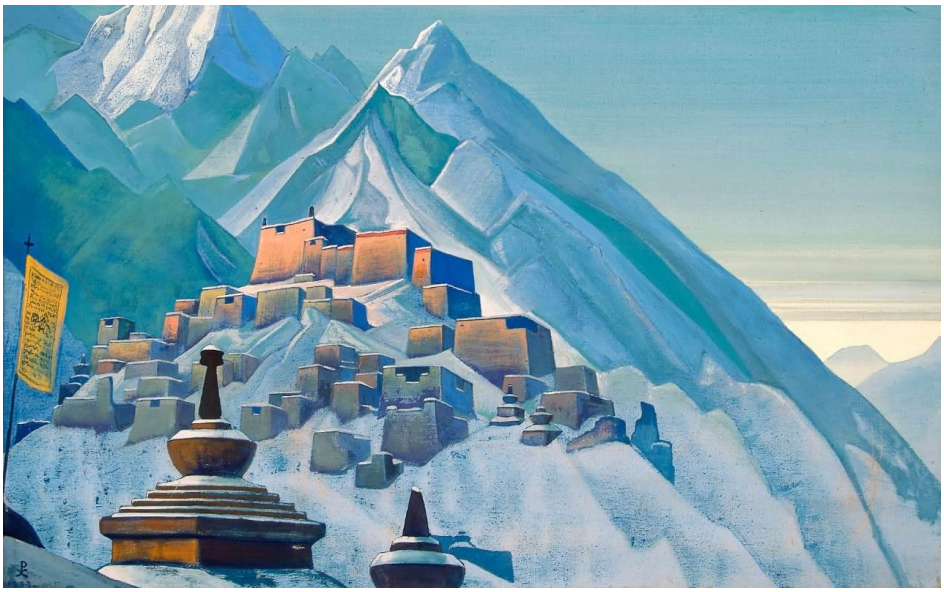

रोरिक की कला भारत की अमूल्य धरोहर है जिसमें आध्यत्मिक प्रेरणा है। उनके चित्रों में जो माधुर्य, रस और उदात्त भाव है और उनके चित्रण की जो अपनी निजी शैली है वह बेजोड़ है। किसी से उसकी तुलना नहीं की जा सकती।" रोरिक की कला में एक प्रकार की गहरी संवेदना और अंतर की पुकार है जो चित्रपट पर रहस्यमयी गारिमा लिये उभरी है, किन्तु शनैः- शनैः रंग और रेखाऍ उस रहस्य को स्वंय खोल देते है, पहेली को स्वंय बुझा देते है उनके चित्र. रहस्यों के आवरण को भेद कर कलाकार के प्राणों में झाकने को प्रेरित करते है , लगता है मानों इस दार्शनिक शिल्पी की तूलिका ने लौकिकता के झीने पर्दे में अलौकिकता को प्रश्रम देकर समूचे सृजन को पारदर्शी बना दिया जहॉ छिपा पड़ा रहस्य स्वयं गहरी आत्मकथा कह देता हैं।[3]

निकोलस रोरिक को हिमालय की गोंद में ही सत्य की प्रतीति हुई। हिमालय स्थित कुल्लु घाटी में रोरिक ने एक निजी आश्रम स्थापित किया। निकोलस रोरिक के घर को अब संग्रहालय का रूप दे दिया गया है जिसे "रोरिक आर्ट गैलरी" के नाम से जाना जाता है। इसी जगह पर उनके बनाये चित्रों का संग्रहालय भी है। रोरिक 13 दिसम्बर 1947 को दिवंगत हुए।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585035

निष्कर्ष

रूस से भारत आकर बसने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी रोरिक न केवल एक महान चित्रकार ही थे बल्कि पुरातत्ववेता, कवि, लेखक, दार्शनिक और शिक्षाविद् थे। कला में रोरिक का वही स्थान है, जो विज्ञान में आइन्स्टाइन का। उनके हिमालय विषयक चित्रों में हिमालय की गारिमापूर्ण आत्मा का अंकन है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1] समकालीन कला (1985) ललित कला अकादमी का प्रकाशन नवंबर . मई ।
[2] समकालीन कला (अंक 44-45) ललित कला अकादमी का प्रकाशन।
[3] गुर्टू शचीरानी (1969) कला के प्रणेता।
[4] चंद्रिकेश जगदीश (2003) हिमालय की आत्मा का चितेरा निकोलाई रोरिक ISBN: 8123010877